नया ज्ञानोदय

जुलाई–सितम्बर 2022
मूल्य : 50 रुपये

गीतांजलि श्री पर विशेष सामग्री

भारतीय ज्ञानपीठ

भारतीय ज्ञानपीठ

संस्थापक

श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शांति प्रसाद जैन

नया ज्ञानोदय

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

अंक : 219 | जुलाई-सितंबर 2022

सम्पादक

मधुसूदन आनन्द

सह-सम्पादक

महेश्वर, प्रभाकिरण जैन

साहू अखिलेश जैन
प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ
18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड,
नई दिल्ली-110 003
फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423
ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com
bjnanpith@gmail.com

वेबसाइट : www.jnanpith.net

Naya Gyanodaya
A Literary Quarterly Magazine
Editor : Madhu Sudan Anand
Language : Hindi
Published by **Bharatiya Jnanpith**
18, Institutional Area, Lodi Road,
New Delhi-110 003

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

मूल्य :

50 रुपये + 10 रुपये (डाक खर्च)

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए :

वार्षिक (4 अंक) : 240 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

नया ज्ञानोदय की ई-प्रति www.notnul.com पर उपलब्ध है।

नया ज्ञानोदय की पीडीएफ फाइल ई-मेल से प्राप्त करने हेतु शुल्क
10 डॉलर वार्षिक (विदेश), 200 रुपये वार्षिक (भारत)
विशेष जानकारी के लिए marketing@jnanpith.net पर सम्पर्क करें

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ (**Bharatiya Jnanpith**) के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें।

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

आवरण चित्र : इंटरनेट से साभार, साज-सज्जा व आवरण : महेश्वर, भीतरी रेखांकन : संदीप राशिनकर

www.jnanpith.net

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार

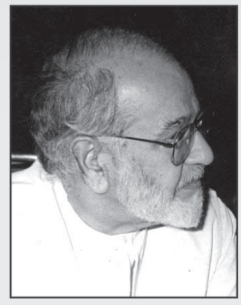
अज्ञेय

रामधारी सिंह दिनकर

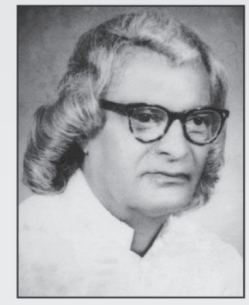
सुमित्रानन्दन पंत

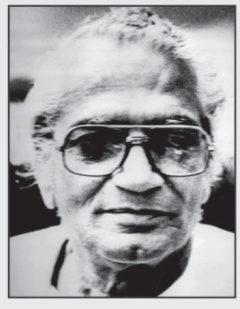
श्रीनरेश मेहता

महादेवी वर्मा

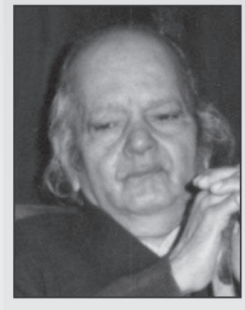
अमरकान्त

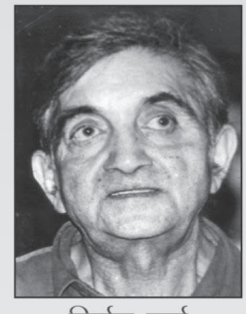
निर्मल वर्मा

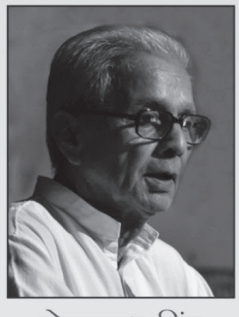
केदारनाथ सिंह

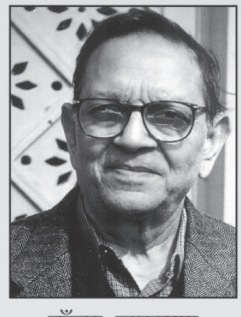
कुँवर नारायण

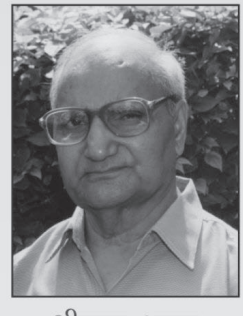
श्रीलाल शुक्ल

कृष्णा सोबती

www.jnanpith.net

साहित्य, समाज, संस्कृति और
कलाओं पर केन्द्रित

अंक : 219
जुलाई-सितंबर : 2022
पृष्ठ : 124 (आवरण सहित)

www.jnanpith.net

अनुक्रम

जगदीश्वर चतुर्वेदी

अनुराधा सिंह

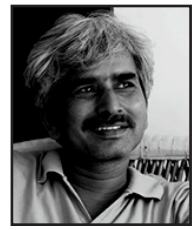
प्रभात

असद जैदी

अनुकृति उपाध्याय

वैभव सिंह

सम्पादक का निवेदन / 05

विशेष

गीतांजलि श्री की कथा-बगिया : रवीन्द्र त्रिपाठी / 6
रेत समाधि और मूल्यांकन के नए आयाम : जगदीश्वर चतुर्वेदी / 10
मेरी रचना-प्रक्रिया, भटकाव से पहचान की है : गीतांजलि श्री / 20

स्मरण : गोपीचन्द नारंग

ऐसा कहाँ से लाऊँ कि तुझ सा कहें जिसे : खुर्शीद आलम / 22

कथा-कहानी

जवाकुसुम : वैभव सिंह / 24
गली और चिड़ियाँ : अनुकृति उपाध्याय / 30
उसके बाद : रूपसिंह चन्देल / 33
टूटते पुल, और दरकती दीवारें : राजेंद्र कुमार कनौजिया / 39
वह मकान : जीवन सिंह ठाकुर / 47

पंजाबी कहानी

रवि डिफेंडर : भगवंत रसूलपुरी / 50

लातिन अमेरिकी कहानी

इनमें से एक दिन : गैब्रिएल गार्सिया मार्खेज़ / 57

रूसी कहानी

अपराधी : अंतोन चेखव / 59

जापानी कहानी

शिकारी चाकू : हारुकी मुराकामी / 61

कविताएँ

प्रभात / 69
असद जैदी / 72
अनुराधा सिंह / 75
विश्वनाथ सचदेव / 78
सुभाष राय / 80
मुकेश कुमार / 84

विशेष प्रस्तुति : युक्रेनीयाई कविताएँ

एलेक्जेंडर काबानोव / 87
ल्या किवा / 87
हेलीना क्रुक / 87
मरीना त्स्वेतेवा / 88
सेरहिय ज़दान / 88

टिप्पणी

यह भी इसी देस की कथा है महाराज : यादवेन्द्र 89

मलयालम कविता

के. सच्चिदानंदन / 93

संस्मरण

एक पंडिताइन के मुंह में आब-ए-ज़मज़म : प्रदीप कुमार / 96

गद्य के रूप

एक कवि-पत्रकार का रोजनामचा : विष्णु नागर / 99

आलेख

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में आंचलिकता : सोनी पांडेय / 109

समीक्षा

नयी कहानी विधा के नए आयाम : स्वित शर्मा / 112
चुनौतियों के अँधेरे में जुगनू का विश्वास : अश्वनी शाण्डिल्य / 113
जीवन के बड़े मूल्यों को उठाने वाली कृति : रेणुका अस्थाना / 115

सिनेमा

भगवदज्जुकम् : विजय शर्मा / 117

विदेश में हिन्दी

अमेरिका में हिंदी शिक्षा और भारतीय संदर्भ : अशोक ओझा / 119

साहित्य, समाज, संस्कृति और कलाओं पर केंद्रित

नया ज्ञानोदय मासिक पत्रिका के

वार्षिक सदस्य बनें

व्यक्तियों / संस्थाओं के लिए

वार्षिक (4 अंक) : 240 रुपये (डाक खर्च सहित)

नया ज्ञानोदय रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगाने हेतु डाक व्यय अतिरिक्त

शुल्क 'भारतीय ज्ञानपीठ' (Bharatiya Jnanpith) के नाम से भेजें।
(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

सम्पादक : **मधुसूदन आनन्द** | सह-सम्पादक : **महेश्वर, प्रभाकिरण जैन**

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-110 003

फोन : 011-2462 6467, 2469 8417, 4152 3423 ई-मेल : nayagyanoday@gmail.com / bjnanpith@gmail.com

www.jnanpith.net

सम्पादक का निवेदन

एक लंबे समय तक ऑनलाइन रहने के बाद अब आपकी पत्रिका फिर से मुद्रित होकर आपके पास पहुंच रही है। हमें खुशी है कि इस बार हिंदी की कथाकार-उपन्यासकार गीतांजलि श्री के नवीनतम उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेजी अनुवाद को इंटरनेशनल बुकर प्राइज से सम्मानित किया गया है, जिससे तमाम हिंदी और इक्कीस अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों के लिए नये दरवाजे खुले हैं। रेत समाधि का अंग्रेजी अनुवाद चर्चित अनुवादक डेजी रॉकवेल ने 'टूम ऑफ सैंड' के नाम से किया है। 'रेत समाधि' को इस तरह मिली अंतरराष्ट्रीय मान्यता के इस ऐतिहासिक मौके पर हम मीडिया और साहित्य को कवर करने वाले चर्चित पत्रकार-आलोचक रवीन्द्र त्रिपाठी का आलेख और यशस्वी आलोचक प्रो. जगदीश्वर चतुर्वेदी का शोधपूर्ण आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं।

करीब 120 पेज वाले इस बार के नया ज्ञानोदय में आप राजस्थान के इधर तेजी से चर्चित हुए कवि प्रभात, वरिष्ठ कवि असद जैदी, विश्वनाथ सचदेव, अनुराधा सिंह, सुभाष राय, मुकेश कुमार की ताजा कविताओं का आस्वाद तो लेंगे ही, साथ ही गैब्रिएल गार्सिया मार्खेज़, अंतोन चेखव और हारुकी मुराकामी की कथाओं को भी पढेंगे।

आलोचक-कथाकार वैभव सिंह, अनुकृति उपाध्याय, रूपिसंह चंदेल और पंजाबी के कथाकार भगवंत रसूलपूरी आदि कई लेखकों की कहानियाँ भी आपको संभवतः समृद्ध करने वाली लगेंगी। इस बार से वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप कुमार के संस्मरण, जो अनेक मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने लिखे हैं, पढ़ने को मिलेंगे।

चर्चित कवि-कथाकार-व्यंग्यकार-पत्रकार विष्णु नागर का रोजनामचा भी यथार्थ और अनुभव संसार के सरोकारों के साथ यहाँ उपस्थित हैं। इस बार पटना से अरुणजी ने यूक्रेनी कवियों के अनेक उपलब्ध टवीट्स का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कर के हमें भेजा है, जिसमें युद्ध में बर्बाद किये जा रहे एक देश के विध्वंस और आत्मसंघर्ष की आवाजें सुनी जा सकती हैं।

मलयालम के विद्वान कवि के. सच्चिदानंदन की कविताओं के हिन्दी अनुवाद भी शायद आपको पसंद आएँ। हमने लोकप्रिय ऑलनाइन पत्रिका समालोचन से भी कुछ खास सामग्री आपके लिए जुटाई है। उसके लिए भी हम समालोचन के विद्वान संपादक और लेखकों के आभारी हैं।

आपकी प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी। बहुत शुभकामनाओं के साथ

भारतीय ज्ञानपीठ
ज्ञान गरिमा के 78 वर्ष

गीतांजलि श्री की कथा-बगिया

रवीन्द्र त्रिपाठी

रवींद्र त्रिपाठी

हिंदी के वरिष्ठ साहित्य - रंगमंच - फिल्म आलोचक, नाटककार, अनुवादक, डॉक्युमेंट्री फिल्मकार, सम्पादक और यू-ट्यूबर हैं।

मो. 9873196343

गीतांजलि श्री (जन्म 1957) लिख और प्रकाशित तो बरसों से हो रही हैं। 1991 में उनकी पहली कहानी प्रकाशित हुई थी। अब तक उनके पांच उपन्यास 'माई', 'हमारा शहर उस बरस', 'तिरोहित' 'खाली जगह', 'रेत- समाधि' और कई कहानियां आ चुकी हैं। इसलिए, जैसा कि हिंदी में कायदा है, उन्हें सहज ही हिंदी की वरिष्ठ लेखक (यहां आगे से लेखिका के लिए लेखक शब्द का ही प्रयोग किया जायेगा) कहा जाना चाहिए। वे हैं भी। और जो वरिष्ठ लेखक की श्रेणी में आ या मान लिया गया हो और जिसकी रचनाओं के कई भाषाओं में अनुवाद हो चुके हों, उसके लिखे को कौन नहीं जानेगा? खासकर उस बिरादरी में जो साहित्य प्रेमियों की मानी जाती है।

लेकिन ये भी सच है कि जब गीतांजलि के उपन्यास 'रेत समाधि' के अंग्रेजी अनुवाद 'टूम ऑफ सैंड' (अनुवादक- डेजी रॉकवेल) को एक प्रक्रिया के बाद इंटरनेशनल बुकर प्राइज के लिए चयनित किए जाने की घोषणा की गई तो हिंदी के कुछ (सभी नहीं) चतुर-सुजान साहित्य-प्रेमियों ने, अपनी अज्ञानता और अहंकार का सम्मिलित परिचय देते हुए सोशल मीडिया से लेकर परस्पर या फोनाफोनी बातचीत में ये पूछा कि ये गीतांजलि श्री कौन हैं? आकस्मिक नहीं कि हिंदी और भारतीय साहित्य में इस बुकर पुरस्कार का जहां एक ओर स्वागत किया गया वहां कुछ ऐसे भी 'कुपित हिंदीप्रेमी' सोशल मीडिया पर अवतरित हो गए जो तरह तरह की टिप्पणियां करने लगे जिनको संक्षेप में इस तरह कह सकते हैं- 'ये गीतांजलि श्री कौन हैं', 'ये पुरस्कार हिंदी को नहीं उसके अंग्रेजी अनुवाद को मिला है इसलिए हिंदीवालों को खुश होने की जरूरत नहीं', 'ये उपनिवेशवादी ताकतों की चाल और साजिश है जो हिंदी को उसकी जातीय परंपरा से काटना चाहते हैं', इस उपन्यास में कई जगहों पर ठीक से अर्ध-विराम, पूर्ण विराम या दूसरे विराम-चिन्ह तक नहीं लगे हैं जिससे लगता है कि लेखक के अलावा प्रकाशक भी हिंदी का व्याकरण नहीं जानते', ये उपन्यास पठनीय नही है', आदि आदि। मतलब एक तबका तैयार हो गया जो अपने वाग्जाल भरे हथियारों के साथ इस पर टूट भी पड़ा।

हालांकि ये सही है कि इस तरह की कुटुक्तियां सभी भाषाओं के साहित्य हमेशा से होती आई हैं। हिंदी में ही सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' से लेकर प्रेमचंद जैसे दिग्गज भी कहां बच पाए? पर इस सबके पीछे हमेशा अज्ञान या दुर्भावना ही नहीं होती। साहित्य में आस्वाद की समस्या भी हमेशा बनी रहती है और जब भी लीक से कुछ अलग हटकर लिखा जाता है तो उसे लेकर एक तबके की तरफ से बतंगड़ बनाया जाता है।

इसलिए गीतांजलि श्री और उनके लेखन को लेकर उठे सवालों को एक खास आस्वादपरक परिप्रेक्ष्य में देखना आवश्यक है। खासकर उपन्यास कला के सिलसिले में। उपन्यासों को लेकर दुनिया भर में कई तरह की धारणाएं रही हैं। उनमें एक ये कि ये औरतों की विधा है। हिंदी में भी तीस-चालीस साल पहले तक दिग्गज कहे जानेवाले कुछ आलोचक भी इसी तरह की बातें कहते रहे। शायद उनमें से कुछ इस बात से भी अनजान थे कि ये धारणा कहां और कैसे बनी? फिर भी वे इसे दुहराते-तिहराते रहे। फिर भी ये धारणा कैसे बनी ये भी समझने की बात है।

असल में इस धारणा के पनपने में बहुत बड़ी भूमिका फ्रांसीसी उपन्यासकार बालजक और उनके लेखन की रही। बालजक अपने समय के यानी उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध के बड़े लोकप्रिय फ्रांसीसी

उपन्यासकार थे। खासकार फ्रांसीसी महिलाओं के बीच। इसी कारण उनकी कई प्रेमिकाएं रहीं। बात यहीं तक सीमित नहीं रही। कई महिलाएं उनके उपन्यास पढ़तीं और रोतीं। इसी कारण तत्कालीन फ्रांसीसी साहित्यिक समाज के पाठकों में महिलाओं की संख्या भी बढ़ी और ये मिथक बनता गया कि उपन्यास महिलाओं के पढ़ने की विधा है। हालांकि ये उपन्यास की लोकप्रियता को लेकर एक सरलीकरण है फिर भी हकीकत के काफी करीब है।

खैर, जमाना बदलता गया और यूरोप के अलावा पूरी दुनिया में उपन्यास की कला अपने अपने ढंग से विकसित होती रही। आगे चलकर उपन्यास का मिजाज, हर देश और भाषा में, इस तरह बदलता रहा कि उसके पाठकों का दायरा बढ़ता गया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में रूस में तोल्सतोय और दोस्तोवस्की ने और बीसवीं सदी में कोलंबियाई गैब्रिएल गार्सिया मार्केस और पुर्तगाली होजे सारामागो की बातें करें (और भी कई नाम लिए जा सकते हैं) तो उपन्यास कला सभ्यता विमर्श तक पहुंची। साथ में एक और बात हुई। उपन्यास की भाषा में कई तरह के बदलाव आए। प्रयोगात्मक भाषिक प्रयोगों का भी उपन्यास में प्रयोग हुआ। खासकर सारामागो के उपन्यास में विराम चिन्हों का इतना कम उपयोग होने लगा कि पाठक को रचना के संपूर्ण आस्वाद के लिए ठहर ठहर कर पढ़ना पड़ा कि समझ आए कि एक ही वाक्य में फलां बात कौन बोल रहा है और उसका कथन किसको संबोधित है। सारामागो के उपन्यास 'बालासार और ब्लिमुंडा' को पढ़ने के दौरान तो पाठक अतिरिक्त सजग न रहे तो वो समझ नहीं पाएगा कि कौन सी बात किसने कही क्योंकि उसमें भी कई स्थलों पर विराम चिन्हों का इस्तेमाल न्यूनतम है।

ऐसा नहीं है कि हिंदी में इस तरह के प्रयोग नहीं हुए। शुरुआत तो फणीश्वर नाथ रेणु से हो गई गई थी जब 'मैला आंचल' के जागरूक

खैर, जमाना बदलता गया और यूरोप के अलावा पूरी दुनिया में उपन्यास की कला अपने अपने ढंग से विकसित होती रही। आगे चलकर उपन्यास का मिजाज, हर देश और भाषा में, इस तरह बदलता रहा कि उसके पाठकों का दायरा बढ़ता गया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में रूस में तोल्सतोय और दोस्तोवस्की ने और बीसवीं सदी में कोलंबियाई गैब्रिएल गार्सिया मार्केस और पुर्तगाली होजे सारामागो की बातें करें (और भी कई नाम लिए जा सकते हैं) तो उपन्यास कला सभ्यता विमर्श तक पहुंची।

पाठक के लिए ये जरूरी हो गया कि वो सिर्फ वाक्यों के प्रति ही नहीं उन ध्वनियों के प्रति भी सावधान रहें जो इसमें औद्यंत मौजूद हैं। रेणु की दूसरी रचनाओं में भी यही बात है। इसलिए अगर आप उनके सहृदय पाठक होना चाहते हैं तो आपकी आखें ही नहीं बल्कि आपके कान भी सक्रिय होने चाहिए। बेशक आप आंख से ही किताब पढ़ेंगे लेकिन अगर उसमें किसी पक्षी या जलधारा की ध्वनि का उल्लेख हैं तो आप कान की स्मृतियों या स्मृति परक कल्पना से ही उनका आस्वाद कर सकते हैं। कृष्ण बलदेल वैद भी अपने उपन्यासों में कई जगहो पर व्याकरण तोड़ते मरोड़ते हैं। लेकिन बड़े पैमाने पर जिस उपन्यास में व्याकरणिक नियमों की तोड़फोड़ हुई वो है कृष्णा सोबती का 'ज़िंदगीनामा'। ये आकस्मिक नही है कि आज भी ये उपन्यास पाठकों को चुनौती पेश करता है और कई लोग ये कहते पाए जाते हैं कि ये समझ में नहीं आ रहा है। हालांकि इसकी कलात्मकता स्थापित हो चुकी है। ये भी रेखांकित किए जाने योग्य है कि गीतांजलि श्री कृष्णा सोबती को अपना गुरु मानती हैं और 'रेत-समाधि' कृष्णा जी